BA-(H)
मैथिली साहित्य
परिचायिका
Lecture - II

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

मधुपक रचना :- काशीकान्त मिश्र

मधुपक रचना छोट-पैघ कुल २० गोट पोथी अद्यावधि प्रकाशित अछि। सबसँ पहिल पोथी १९४१ ई० मे छपल छल, नाम छल तकर - अपूर्व रसगुल्ला, एखन धरिक सबसँ नवका पोथी अछि - मधुप सप्तशती, जे 1982 मे छपल अछि। एकर अतिरिक्त अठारह गोट पोथी निम्नलिखित अछि - झंकार, शतदल, टटका जिलेबी, कोबर गीत, पंचमेर, त्रिवेणी, ताण्डव, गीत मंजरी, चौरि चुप्पे, त्रिकुशा, राधा विरह, विदागीत, अँगातरंगावली, वट सावित्री, दुर्गा सप्तशती, मैथिली सुधा, द्वादशी, प्रेरणा-पुंज, बोलबम।

हिनका बीच-बीचमे पुरस्कार ओ सम्मान सेहो प्राप्त होइत रहलनि अछि। १९७० ई०क साहित्य अकादेमी पुरस्कार हिनका

'राधा-विरह' महाकाव्य पर सम्मानित कयल गेलाह। शतदल आ कोबर-गीत पर सेहो पुरस्कृत भेल छथि। प्रेरणा-पुंज पर हिनका मैथिली अकादमी, पटना द्वारा विद्यापति-पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेल छनि।

विषय-वस्तुक दृष्टिएँ हिनक काव्यक परिधि बहुत विशाल अछि। पहिने जकरा हेय मानल जाइत छल, उपेक्षित भेल जे विषय अछूत बुझल जाइत छल, ताहू सभकेँ ई काव्यक परिधिमे आनलनि आ ओहिपर सुन्दर कविताक रचना कयलनि।

काव्यशैलीक दृष्टिएँ सेहो ई नव-नव प्रयोग करैत रहलाह अछि। ई जाही सहजतासँ सरल देशज शब्दक प्रयोग कए छोट-छोट मनभर गीत बना लैत छथि ताही सहजतासँ तत्सम शब्दक पथार लगाकए जटिलसँ जटिल छन्दक सेहो रचना कए लैत छथि। लोकगीतक ई सरल रूप देखल जाय —

हम जेबौ कुबेरसर मोर
रीतीकौ डोर
पहिरि कौ कड़ा
झनकाय झनानन छाड़ा।

मधुपक काव्यधारा तीन दिशामे प्रवाहित भेल अछि — लोकधुनपर आधारित गीतक दिशामे, करुणासँ ओतप्रोत शोषित वर्गक प्रताड़नाकेँ स्वर दैत कथाकाव्यक दिशामे तथा संस्कृत शैलीक अनुकरणपर मुक्तक आ महाकाव्यक दिशामे।

'आदर्शी' हिनक कथाकाव्यक संग्रह थिक जाहिमे १२ गोट कथाकाव्य अछि – सभ मुक्तक छन्दमे। धवल आदर्शी सभसँ प्रसिद्ध कथाकाव्य सिद्ध भेल। एहि करुणान्त कथाकाव्यमे जमीन्दारक पैशाचिक अत्याचारक रोमांचक ओ हृदयस्पर्शक वर्णन भेल अछि।

प्रो० रमानाथ झा हिनक काव्यक समीक्षा करैत कहैत छथि – "मधुपजीक महत्व एहि हेतुए नहि अछि जे हुनक विषयवस्तु अथवा शिल्प शैलीक क्षेत्र व्यापक छनि, प्रत्युत हुनक काव्यक महत्व निहित अछि भाव-विन्यासक विशिष्ट आकर्षवती भंगिमामे, भावानुभूतिक विलक्षण उपस्थापनमे, जे स्थान-स्थानपर झलकैत भेलहुँ सर्वथा मौलिक एवं अद्वितीय अछि। हिनक कविताक कल्पनाक प्रौढ़ता एवं वर्णनक वैशिष्ट्यक ख्याति रहितहु सभसँ पहिने ध्यान जाइत अछि ओहिमे प्रयुक्त शब्दालंकारक संस्कार दिस। ई मधुपजी यमक ओ अनुप्रासक नियोजनामे मैथिली साहित्यमे अद्वितीय अछि।

Sarvjit Kumar Ram